ज्योतिष : तारों से आत्मा तक की एक समन्वित यात्रा

ज्योतिषाचार्य
तेजस्कर पाण्डेय

अंतत:, ज्योतिष के माध्यम से जीवन का जाल एक समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जिसमें जीवन के सभी आयाम—भौतिक, मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक—एक साथ जुड़े हुए हैं .यह दृष्टिकोण हमें यह सिखाता है कि जीवन केवल घटनाओं की श्रृंखला नहीं, बल्कि एक अर्थपूर्ण और उद्देश्यपूर्ण यात्रा है .ज्योतिष इस यात्रा का एक महत्वपूर्ण साधन है, जो हमें यह समझने में सहायता करता है कि हम इस यात्रा को किस प्रकार अधिक संतुलन, समन्वय और सामंजस्य के साथ जी सकते हैं .यह यात्रा तारों से आत्मा तक की है—एक ऐसी यात्रा जिसमें हम बाहरी ब्रह्मांड के संकेतों को समझते हुए अपने आंतरिक ब्रह्मांड की ओर अग्रसर होते हैं .यह यात्रा हमें उस सत्य का बोध कराती है कि हम स्वयं उसी चेतना का अंश हैं, जो इस समस्त सृष्टि को संचालित कर रही है .जब यह बोध हमारे भीतर स्थापित हो जाता है, तब जीवन का जाल केवल एक अवधारणा नहीं, बल्कि एक जीवंत अनुभव बन जाता है—एक ऐसा अनुभव जो हमें हमारे वास्तविक स्वरूप से जोड़ता है और हमें जीवन के साथ एक गहरे सामंजस्य में स्थापित करता है .

जीवन का जाल एक अत्यंत गहन, सूक्ष्म और बहुआयामी अवधारणा है, जो समस्त सृष्टि के अंतर्संबंधों को समझने का आधार प्रदान करती है.यह जाल केवल भौतिक स्तर पर ही नहीं, बल्कि चेतन, मानसिक, आध्यात्मिक और सामाजिक स्तरों पर भी समान रूप से विद्यमान है.प्रत्येक जीव, प्रत्येक विचार, प्रत्येक क्रिया और प्रत्येक अनुभव इस जाल का एक तंतु है, जो अन्य तंतुओं से जुड़कर एक व्यापक संरचना का निर्माण करता है.इस संदर्भ में ज्योतिष उस अदृश्य व्यवस्था को समझने का एक प्राचीन और सशक्त माध्यम है, जो इस जाल को संचालित करती है.

ज्योतिष के माध्यम से हम यह जानने का प्रयास करते हैं कि किस प्रकार आकाश में स्थित ग्रह-नक्षत्रों की गति और स्थिति हमारे जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करती है और किस प्रकार यह प्रभाव एक समन्वित और अर्थपूर्ण रूप में प्रकट होता है.मानव इतिहास में जब भी मनुष्य ने अपने अस्तित्व के मूल प्रश्नों—मैं कौन हूँ, मैं कहाँ से आया हूँ, और मेरा जीवन किस दिशा में जा रहा है—का उत्तर खोजने का प्रयास किया, तब उसने आकाश की ओर दृष्टि उठाई.आकाश, जो अनंत है, रहस्यमय है और निरंतर परिवर्तनशील है, मनुष्य के लिए सदैव प्रेरणा और जिज्ञासा का स्रोत रहा है.नक्षत्रों की स्थिरता और ग्रहों की गतिशीलता ने मानव मन में यह भावना उत्पन्न की कि इस समस्त व्यवस्था के पीछे कोई गहन नियम और क्रम विद्यमान है.यही भावना ज्योतिष के विकास का मूल आधार बनी.यह विकास केवल ज्ञान की जिज्ञासा से नहीं, बल्कि जीवन को समझने और उसे दिशा देने की आवश्यकता से प्रेरित था.

भारतीय परंपरा में ज्योतिष को वेदों का नेत्र कहा गया है, क्योंकि यह वह साधन है जिसके माध्यम से हम समय, दिशा और परिस्थिति का ज्ञान प्राप्त करते हैं.समय का ज्ञान केवल घड़ी की सूईयों से नहीं होता, बल्कि उन सूक्ष्म परिवर्तनों से होता है जो प्रकृति और ब्रह्मांड में निरंतर घटित होते रहते हैं.सूर्य का उदय और अस्त, चंद्रमा की कलाएँ, ऋतुओं का परिवर्तन—ये सभी समय के संकेत हैं, जिन्हें ज्योतिषीय दृष्टि से समझा जाता है.इस प्रकार ज्योतिष समय का दार्शनिक और व्यावहारिक दोनों प्रकार से अध्ययन करता है, और यह बताता है कि जीवन के विभिन्न चरणों में कौन-सी शक्तियाँ सक्रिय होती हैं और उनका प्रभाव किस प्रकार प्रकट होता है.जीवन के जाल को समझने के लिए यह आवश्यक है कि हम इसे केवल एक रैखिक प्रक्रिया के रूप में न देखें, बल्कि इसे एक चक्रीय और परस्पर संबंधित संरचना के रूप में समझें.

ज्योतिष में समय को चक्रों के रूप में देखा जाता है—दशा चक्र, गोचर चक्र, युग चक्र—जो यह दर्शाते हैं कि जीवन में घटनाएँ एक निश्चित क्रम और लय के अनुसार घटित होती हैं.यह लय केवल बाहरी घटनाओं में ही नहीं, बल्कि हमारे आंतरिक अनुभवों में भी परिलक्षित होती है.उदाहरण के लिए, जीवन में ऐसे समय आते हैं जब हम अत्यधिक सक्रिय और ऊर्जावान होते हैं, और ऐसे समय भी आते हैं जब हम अंतर्मुखी और चिंतनशील हो जाते हैं.ये परिवर्तन केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि ब्रह्मांडीय लयों से जुड़े होते हैं, जिन्हें ज्योतिष के माध्यम से समझा जा सकता है.मनोवैज्ञानिक स्तर पर जीवन का जाल और भी अधिक जटिल और सूक्ष्म हो जाता है.मनुष्य का मन अनेक परतों से बना हुआ है—चेतन, अवचेतन और अचेतन—और इन सभी परतों में विभिन्न प्रकार की प्रवृत्तियाँ और संस्कार विद्यमान होते हैं.ज्योतिष इन प्रवृत्तियों को समझने का एक प्रतीकात्मक ढाँचा प्रदान करता है.प्रत्येक ग्रह एक विशेष प्रकार की ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करता है, और उनकी परस्पर स्थिति इन ऊर्जाओं के संतुलन या असंतुलन को दर्शाती है. इस प्रकार कुंडली एक मनोवैज्ञानिक मानचित्र के रूप में कार्य करती है, जो यह बताती है कि व्यक्ति के भीतर कौन-सी शक्तियाँ सक्रिय हैं और वे किस प्रकार उसके व्यवहार और निर्णयों को प्रभावित कर रही हैं.

जीवन के जाल का एक महत्वपूर्ण आयाम कर्म का सिद्धांत है.भारतीय दर्शन में कर्म को जीवन की मूल प्रेरक शक्ति माना गया है.प्रत्येक क्रिया का एक परिणाम होता है, और यह परिणाम केवल वर्तमान जीवन तक सीमित नहीं, बल्कि अनेक जन्मों तक विस्तारित होता है.ज्योतिष इस कर्म सिद्धांत को समझने का एक माध्यम है, जो यह बताता है कि किस प्रकार पूर्व कर्म वर्तमान जीवन की परिस्थितियों को प्रभावित करते हैं, और किस प्रकार वर्तमान कर्म भविष्य के अनुभवों को आकार देते हैं.इस प्रकार जीवन का जाल केवल वर्तमान क्षण का नहीं, बल्कि अतीत, वर्तमान और भविष्य के बीच एक निरंतर प्रवाह का प्रतीक है.सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर भी जीवन का जाल अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है.प्रत्येक समाज अपनी परंपराओं, मान्यताओं और मूल्यों के माध्यम से इस जाल को अभिव्यक्त करता है.

ज्योतिष इन परंपराओं का एक महत्वपूर्ण अंग है, जो जीवन के विभिन्न संस्कारों और निर्णयों में मार्गदर्शन प्रदान करता है.यह केवल व्यक्तिगत जीवन को ही नहीं, बल्कि सामाजिक संरचना को भी प्रभावित करता है.उदाहरण के लिए, विवाह का चयन, शुभ मुहूर्त का निर्धारण, और विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन- आधुनिक युग में, जहाँ विज्ञान और प्रौद्योगिकी का प्रभाव बढ़ रहा है, वहाँ जीवन के जाल की अवधारणा को नए दृष्टिकोण से समझा जा रहा है.पारिस्थितिकी, प्रणाली सिद्धांत और समग्र चिकित्सा जैसे क्षेत्रों में यह स्वीकार किया जा रहा है कि जीवन एक परस्पर संबंधित प्रणाली है, जहाँ प्रत्येक तत्व अन्य तत्वों पर निर्भर करता है.यह दृष्टिकोण ज्योतिष के मूल सिद्धांतों के साथ सामंजस्य स्थापित करता है, जो यह कहते हैं कि ब्रह्मांड और मानव जीवन एक ही व्यवस्था के विभिन्न स्तर हैं.इस प्रकार आधुनिक विज्ञान और प्राचीन ज्योतिष के बीच एक संवाद संभव है, जो जीवन के जाल को और अधिक गहराई से समझने में सहायता कर सकता है.

साप्ताहिक राशिफल

दिनांक- 05 से 11 अप्रैल 2026 तक

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास,
कोतवाली बाजार,
जबलपुर मो.नं.
098266-21998

साप्ताहिक ग्रहस्थिति- इस सप्ताह सूर्य मीन राशि में, मंगल मीन राशि में, बुध कुम्भ राशि में ता. 10 को 2.14 रात से मीन राशि में, गुरू मिथुन राशि में, शुक्र मेष राशि में, शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा तुला वृश्चिक धनु और मकर राशि में संचरण करेगा.

ग्रहयोगों का प्रभाव :- ता. 10 को नीचस्थ बुध के प्रभाव से बाजार में अस्थिरता रहती है. रूई में तेजी, सोना चंदी में घटा-बढ़ी के बाद कुछ मंदी, गेहूं, गुड, खांड, तिल, तेल, घी, सरसों में अचानक मंदी के बाद तेजी आएगी.

पर्व-व्रत-त्यौहार :

रविवार	05 अप्रैल को	संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात 9.35
शनिवार	11 अप्रैल को	बरूथिनी एकादशी व्रत,

मेष

इस सप्ताह हंसी खुशी का वातावरण रहेगा, आपकी आंतरिक उर्जा चरम सीमा पर रहेगी, आप जीवन सुखमयपूर्वक व्यतीत करेंगे, आपकी नौकरी की तलाश खत्म हो सकती है,पेशेवर लोगों को वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा. कारोबारी यात्राओं की अधिकता रहेगी, जल्द ही किसी बड़ी योजना को हाल में ले जा सकते हैं.

वृषभ

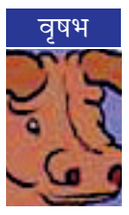

यह सप्ताह इच्छा कामना और आकांक्षाओं का रहेगा, अपने कार्यों के प्रति आप आशावादी बने रहेंगे, कई उतार चढ़ाव आयेंगे, व्यवसायिक फैसला लेने से पहले आप हर पहलू पर विचार करेंगे. घर परिवार में सुख शांति रहेगी. पारिवारिक कार्यक्रमों में धन खर्च होगा. संबंधों के विस्तार पर ध्यान जा सकता है, और लोग प्रसन्न होकर आपसे मिलेंगे.

मिथुन

इस सप्ताह आप मुश्किलों का डटकर मुकाबला करेंगे, नौकरी पेशा लोग अपने पद और आमदानी से संतुष्ट रहेंगे, यदि आप रचनात्मक क्षेत्र में हैं, तो और धन की प्राप्ति होगी. जीवनसाथी के साथ आप धार्मिक यात्रा में जा सकते हैं, जवृश्चिक जायजाद से जुड़े मुकदमें में फैसला आपके पक्ष में होगा, अति आत्मविश्वास से कोई फैसला न लें.

कर्क

इस सप्ताह आप जीवन के नये आयाम छुयेंगे, अपनी मेहनत और लगन के बल पर आप अपनी स्थिति में सुधार करने में सफल रहेंगे, कार्यक्षेत्र मेंआप क्रियाशील रहेंगे. खुले मन मस्तिष्क से समस्या का हल निकालेंगे, आप किसी नये अनुबंध में शामिल हो सकते हैं, जिससे मान सम्मान में प्रगति होगी. आप जिस पर भरोसा करते हैं, वही आपकी जड़ खोदने का प्रयास करेगा.

सिंह

इस सप्ताह स्वास्थ्य में कुछ सुधार होने की आशा है, उधार लेनेदेन से बचने का प्रयास करें, जल्दबाजी में लिये गये निर्णय बदलने पड़ सकते हैं, आयात निर्यात का प्रस्ताव मिलेगा, कामकाजी महिलाओं कोपरेशानी होगी. साझेदारी मेंसंदेह आ जाने के कारण चल रहा कार्य बीच में ही छोड़ना पड़ सकता है, सावधानी बांछनीय, बिना मांगे सलाह देना नुकसानदायक हो सकता है.

कन्या

इस सप्ताह आपको नई नौकरी मिल सकती है, व्यापार के सिलसिले में सार्थक यात्रा का योग बन रहा है, आपके करीबी रिश्तेदारों का सहयोग मिलेगा, उन पर धन व्यय होगा, बिखरे कार्य समेटने का प्रयास करेंगे, संपत्ति के कार्यो में खर्चहोगा, जानबूझकर की गई गलती की क्षमा मांगने में ही हित रहेगा. सप्ताहान्त में पारिवारिक सुखद योजना पर विचार होगा.

तुला

इस सप्ताह आपको उतार चढ़ाव का सामना करना पड़सकता है, कड़ीमेहनत करने पर ही सफलता मिलेगी, आप मानसिक अवसाद में रहेंगे, किसी विवाद के चलते आप के मन में नकारात्मक विचार आते रहेंगे,पूज्य व्यक्ति की सलाह एवं अधिनस्थों का सहयोग आपको लाभकारी रहेगा, व्यवसायिक यात्रा में सावधानी रखें.

वृश्चिक

इस सप्ताह प्रतिस्पर्धा के दौर में किस्मत और मेहनत आपको भरपूर लाभ देगा. आपकी मनोकामना पूरी होगी, जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें. दाम्पत्य जीवन में तनाव की संभावना है. भाईयों के बीच जवृश्चिक जायजाद का बटवारा हो सकता है, वाद विवादसे दूर रहें. अटके हुये कार्य पूरे होंगे. व्यापारिक यात्रा के अच्छेपरिणाम मिलेंगे.

धनु

इस सप्ताह आप खुशी के समाचार सुनेंगे. परिवार की सुख सुविधाओं पर ध्यान दें. आयात निर्यात के बड़े व्यवसाय में लाभ होगा. बेरोजगारों को रोजगार मिलेंगे. प्रापर्टी संबंधी विवाद हल होगा, सप्ताहान्त के अंत में आपके निकटस्थ विरोधी नई मुसीवतों को खड़ी कर सकते हैं, जिसका शुभ एवं शीघ्र समाधान प्राप्त होगा, कामकाजी महिला को परेशानी हो सकती है.

मकर

इस सप्ताह आपकी महत्वाकांक्षा चरम सीमा पर रहेगी, अपनी बुद्धिमानी इच्छायशक्ति के लिजये आपको भाग्य पर निर्भर रहना पड़ेगा. अपना विवेक कार्य में लगायें, आप भविष्य की योजना बनायेंगे. महिला जाति की सलाह उपयोगी सिद्ध होगी. अचानक लाभ का योग है. यात्रायें आशाजनक रहेंगी, किन्तु उठाईगीरों से सावधानी बांछनीय. रोगी के कार्यो में खर्च होगा.

कुम्भ

इस सप्ताह आप अत्याधिक खर्च से चिंतित रह सकते हैं, इसके बाद भी आप अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में क्रियाशील बने रहेंगे, आपको अधिनस्थ की उपेक्षा का शिकार होना पड़ेगा, दाम्पत्य जीवन में प्रसन्नता रहेगी, भूमि भवन प्रापर्टी में खर्च होगा, नये कार्यो पर विचार विमर्श होगा. इसके लिये किसी का सहयोग या बैंक से लोन लेना पड़ सकता है.

मीन

इस सप्ताह आपकी जानपहचान और परिचित का दायरा बढ़ेगा. अच्छा हो आप सामाजिक कार्यो की उपयोगिता को ध्यान में रखकर कार्य करें, आप भविष्य की योजनाओं को बना सकते हैं. पैतृक संपत्ति को बेचकर अपना हिस्सा ले सकते हैं, आप अपने निकट परिजनों के साथ दूर की यात्रा कर सकते हैं. आप वित्तीय मामलों में किसी का सहयोग लेंगे, जो उल्लेखनीय रहेगा.

संकष्टी चतुर्थी पर ऐसे करें गणेश आराधना

इस उपाय से मिलेगी गणेश जी की कृपा

हिंदू धर्म में भगवान गणेश को विघ्नहर्ता कहा जाता है, यानी वे भक्तों के जीवन से हर प्रकार की बाधाओं को दूर करने वाले देवता हैं. यही कारण है कि हर शुभ कार्य से पहले उनकी पूजा की जाती है. लेकिन अगर आप चाहते हैं कि गणेश जी आपसे विशेष रूप से प्रसन्न हों और आपके जीवन के बड़े से बड़े संकट दूर हो जाएं, तो विकट संकष्टी चतुर्थी के दिन की गई पूजा का विशेष महत्व होता है.

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, इस दिन यदि सही विधि और नियमों के साथ पूजा की जाए तो भगवान गणेश शीघ्र प्रसन्न होते हैं और अपने भक्तों की मनोकामनाएं पूरी करते हैं.

खास बात यह है कि इस पूजा में दिखावा नहीं, बल्कि सच्ची श्रद्धा और नियम का पालन सबसे ज्यादा जरूरी माना जाता है.

विकट संकष्टी चतुर्थी के दिन सुबह जल्दी उठकर स्नान करें और स्वच्छ कपड़े पहनें. इसके बाद पूरे दिन व्रत रखने का संकल्प लें. ध्यान रखें कि व्रत के दौरान मन, वचन और कर्म से शुद्धता बनाए रखना भी उतना ही जरूरी है जितना कि भोजन का त्याग. पूजा के लिए घर के मंदिर या किसी साफ स्थान पर एक चौकी रखें और उस पर लाल या पीले रंग का कपड़ा बिछाएं. इसके बाद भगवान गणेश की प्रतिमा या तस्वीर स्थापित करें. माना जाता है कि लाल रंग गणेश जी को अत्यंत प्रिय होता है, इसलिए पूजा में इसका उपयोग शुभ फल देता है.

व्रत के लाभ- संकष्टी चतुर्थी व्रत करने से व्यक्ति के जीवन में कई सकारात्मक बदलाव आते हैं। जीवन के कष्ट और बाधाएं दूर होती हैं धन, समृद्धि और सफलता में वृद्धि होती है मानसिक शांति और आत्मबल बढ़ता है परिवार में सुख और सौहार्द बना रहता है

गणेश जी को प्रसन्न करने के लिए उन्हें पंचामृत से स्नान कराना बहुत शुभ माना जाता है. इसके बाद स्वच्छ जल से अभिषेक करें और उन्हें वस्त्र अर्पित करें. फिर सिंदूर, अक्षत, फूल और विशेष रूप से दूर्वा चढ़ाएं. दूर्वा घास गणेश जी को बेहद प्रिय है और इसे अर्पित करने से वे जल्दी प्रसन्न होते हैं. भोग में मोदक और बेसन के लड्डू जरूर शामिल करें, क्योंकि यह गणेश जी का प्रिय भोजन माना जाता है. साथ ही मौसमी फल भी अर्पित करें. पूजा के दौरान 'ऊं गं गणपतये नमः' मंत्र का जाप करना अत्यंत फलदायी होता है. मान्यता है कि इस मंत्र का 108 बार जाप करने से विशेष लाभ मिलता है .शाम के समय गणेश जी की आरती करें और अपने जीवन की समस्याओं को दूर करने की प्रार्थना करें.

पूजा में चावल रखना बेहद शुभ

अक्षत बिना पूजा मानी जाती अधूरी

हिंदू धर्म में पूजा-पाठ के दौरान उपयोग की जाने वाली हर सामग्री का अपना विशेष महत्व होता है. इन्हीं में से एक है चावल, जिसे धार्मिक भाषा में 'अक्षत' कहा जाता है. मान्यता है कि पूजा में चावल चढ़ाने से व्यक्ति को सुख-समृद्धि, धन और सौभाग्य की प्राप्ति होती है. यही वजह है कि किसी भी देवी-देवता की पूजा अक्षत के बिना अधूरी मानी जाती है.

धार्मिक ग्रंथों और ज्योतिष मान्यताओं के अनुसार, चावल को पूर्णता और शुद्धता का प्रतीक माना जाता है. 'अक्षत' शब्द का अर्थ होता है 'अखंड' यानी जो टूटा हुआ न हो. इसलिए पूजा में हमेशा साबुत चावल ही चढ़ाए जाते हैं. यह जीवन में स्थिरता, समृद्धि और निरंतरता का संकेत देता है.

कहा जाता है कि जब भी हम भगवान को अक्षत अर्पित करते हैं, तो यह हमारी मनोकामनाओं के पूर्ण होने का प्रतीक बनता है. चावल सफेद और शुद्ध होते हैं, जो सकारात्मक ऊर्जा को आकर्षित करने में सहायक माने जाते हैं. यही कारण है कि पूजा के दौरान तिलक के साथ अक्षत लगाने की परंपरा भी प्रचलित है.

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, चावल का संबंध चंद्रमा से माना जाता है. चंद्रमा मन, शांति और भावनाओं का कारक ग्रह है. ऐसे में पूजा में चावल का उपयोग करने से मानसिक शांति मिलती है और घर में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह बना रहता है. जिन लोगों के जीवन में तनाव या अस्थिरता रहती है, उन्हें विशेष रूप से पूजा में अक्षत का प्रयोग करने की सलाह दी जाती है.

पूजा विधि की बात करें तो चावल को हमेशा साफ और साबुत रखना चाहिए. इसे हल्दी या कुमकुम में मिलाकर भी चढ़ाया जाता है, जिससे इसका महत्व और बढ़ जाता है.

जानें हाथ में कलावा पहनने का महत्व

हिंदू धर्म में हाथ में बांधा जाने वाला लाल धागा, जिसे कलावा या मौली कहा जाता है, केवल एक धार्मिक परंपरा नहीं बल्कि आस्था, सुरक्षा और सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक माना जाता है. पूजा-पाठ, यज्ञ, हवन या किसी भी शुभ कार्य की शुरुआत में पंडित द्वारा हाथ में कलावा बांधना एक आम परंपरा है.

धार्मिक दृष्टि से देखा जाए तो कलावा तीन रंगों—लाल, पीला और कभी-कभी हरे धागों से मिलकर बना होता है. ये तीनों रंग ब्रह्मा, विष्णु और महेश का प्रतीक माने जाते हैं. इसे बांधने का अर्थ है कि व्यक्ति इन तीनों देवताओं की कृपा अपने जीवन में आमंत्रित कर रहा है. ज्योतिष शास्त्र के अनुसार,

कलावा बांधने से ग्रहों का अशुभ प्रभाव कम होता है और सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है. विशेष रूप से इसे पूजा के समय मंत्रोच्चारण के साथ बांधा जाता है, जिससे इसका प्रभाव और भी अधिक बढ़ जाता है.

कलावा बांधने के पीछे वैज्ञानिक कारण भी बताए जाते हैं. कलाई में कई महत्वपूर्ण नसें होती हैं, जो शरीर के विभिन्न अंगों से जुड़ी होती हैं. जब कलावा बांधा जाता है, तो यह इन नसों पर हल्का दबाव बनाता है, जिससे रक्त संचार बेहतर होता है और शरीर स्वस्थ रहता है. धार्मिक नियमों के अनुसार, पुरुषों को दाएं हाथ में और महिलाओं को बाएं हाथ में कलावा बांधना चाहिए. ऐसा करने से ऊर्जा का संतुलन बना रहता है और इसका सकारात्मक प्रभाव जीवन पर पड़ता है.

हथेली का तिल बताता है भाग्य

ज्योतिष शास्त्र और हस्तरेखा विज्ञान में शरीर के विभिन्न अंगों पर मौजूद तिल को विशेष महत्व दिया गया है. माना जाता है कि शरीर पर मौजूद तिल व्यक्ति के स्वभाव, भाग्य और भविष्य से जुड़े कई संकेत देते हैं. खासतौर पर हाथ यानी हथेली पर मौजूद तिल को बेहद महत्वपूर्ण माना जाता है, क्योंकि यह सीधे व्यक्ति के कर्म, धन और सफलता से जुड़ा होता है.

हस्तरेखा शास्त्र के अनुसार, हथेली पर तिल होना सामान्य बात नहीं मानी जाती, बल्कि इसे एक विशेष संकेत के रूप में देखा जाता है. यह इस बात का प्रतीक हो सकता है कि व्यक्ति का जीवन संघर्षों से भरा रहेगा या फिर उसे विशेष सफलता प्राप्त होगी—यह पूरी तरह इस बात पर निर्भर करता है कि तिल किस स्थान पर स्थित है.

अगर किसी व्यक्ति की दाहिनी हथेली में तिल होता है, तो इसे आमतौर पर शुभ माना जाता है. कहा जाता है कि ऐसे लोग मेहनती होते हैं और अपने दम पर सफलता हासिल करते हैं. इन्हें जीवन में धन और मान-सम्मान भी प्राप्त होता है. वहीं बाईं हथेली में तिल होने पर व्यक्ति को खर्चीला स्वभाव का माना जाता है, हालांकि यह मान्यता हर व्यक्ति पर समान रूप से लागू नहीं होती.

यदि तिल जीवन रेखा के पास हो, तो यह व्यक्ति के स्वास्थ्य और जीवन की स्थिरता से जुड़ा संकेत देता है. वहीं मस्तिष्क रेखा के पास तिल होना बुद्धिमत्ता और निर्णय क्षमता को प्रभावित करता है.

यदि तिल हृदय रेखा के आसपास हो, तो इसे प्रेम और भावनाओं से जोड़कर देखा जाता है. ऐसे लोग भावुक स्वभाव के होते हैं और रिश्तों को बहुत महत्व देते हैं. वहीं भाग्य रेखा पर तिल होना जीवन में उतार-चढ़ाव और अचानक बदलाव का संकेत माना जाता है. ज्योतिष के अनुसार, तिल का रंग भी मायने रखता है. गहरे काले रंग का तिल अधिक प्रभावशाली माना जाता है, जबकि हल्के रंग का तिल सामान्य प्रभाव देता है. हालांकि, इसे पूरी तरह शुभ या अशुभ कहना सही नहीं है, क्योंकि इसका असर व्यक्ति की कुंडली और अन्य कारकों पर भी निर्भर करता है.

सही दिशा में रखी तिजोरी से बढ़ती है समृद्धि

वास्तु शास्त्र में घर की हर चीज की दिशा का विशेष महत्व बताया गया है, खासकर तिजोरी या धन रखने की जगह का. मान्यता है कि अगर तिजोरी सही दिशा में रखी जाए तो घर में धन की वृद्धि होती है और मां लक्ष्मी की कृपा बनी रहती है. वहीं गलत दिशा में रखी तिजोरी आर्थिक समस्याओं और धन हानि का कारण बन सकती है.

वास्तु विशेषज्ञों के अनुसार, तिजोरी रखने के लिए सबसे शुभ दिशा दक्षिण मानी जाती है, लेकिन इसका मुंह हमेशा उत्तर दिशा की ओर खुलना चाहिए. ऐसा करने से धन के देवता कुबेर की कृपा प्राप्त होती है और घर में धन का आगमन बढ़ता है. उत्तर दिशा को कुबेर की दिशा कहा जाता है, इसलिए तिजोरी का खुलना इसी ओर शुभ माना जाता है. इसके अलावा पश्चिम दिशा में भी तिजोरी रखी जा सकती है, लेकिन ध्यान रखें कि उसका दरवाजा पूर्व दिशा की ओर खुले. पूर्व दिशा को ऊर्जा और सकारात्मकता का स्रोत माना जाता है, जिससे आर्थिक स्थिति मजबूत होती है.

वास्तु शास्त्र में यह भी कहा गया है कि तिजोरी को कभी भी उत्तर-पूर्व में नहीं रखना चाहिए. यह स्थान पूजा के लिए सबसे पवित्र माना जाता है और यहां तिजोरी रखने से मानसिक तनाव और आर्थिक अस्थिरता बढ़ सकती है. इसी तरह, तिजोरी को जमीन से थोड़ा ऊपर रखना चाहिए और उसके नीचे साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए. तिजोरी के आसपास कूड़ा-कचरा या बेकार सामान नहीं होना चाहिए, क्योंकि इससे नकारात्मक ऊर्जा का प्रभाव पड़ता है. एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि तिजोरी को कभी भी खाली नहीं रखना चाहिए. उसमें हमेशा कुछ न कुछ धन या कीमती सामान जरूर होना चाहिए. इसके अलावा शुक्रवार के दिन तिजोरी में हल्दी, चावल या चांदी का सिक्का रखना शुभ माना जाता है, जिससे लक्ष्मी का वास बना रहता है.

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, तिजोरी में लाल कपड़ा बिछाना और उसमें चावल या हल्दी रखना भी बहुत लाभकारी होता है. इससे धन में वृद्धि होती है और घर में सुख-समृद्धि बनी रहती है. यदि आप चाहते हैं कि आपके घर में धन की कभी कमी न हो और आर्थिक स्थिति मजबूत बनी रहे, तो वास्तु के अनुसार तिजोरी की सही दिशा और नियमों का पालन करना बेहद जरूरी है. सही दिशा में रखी तिजोरी न केवल धन बढ़ाती है, बल्कि जीवन में स्थिरता और सकारात्मकता भी लाती है.